

मुक्ता-मणि पुं. (तत्.) मोती।

मुक्ता-मोदक पुं. (तत्.) मोतीचूर का लड्डू।

मुक्ता-लता स्त्री. (तत्.) मोतियों की लड़ी या शृंखला।

मुक्तावली स्त्री. (तत्.) मोतियों की लड़ी।

मुक्ता-स्फोट पुं. (तत्.) सीप।

मुक्ताहल पुं. (तत्.) मोती।

मुक्ति स्त्री. (तत्.) 1. मुक्त होने या करने की अवस्था, क्रिया या भाव 2. किसी प्रकार के जंजाल या सांसारिकता से मुक्त होने का भाव 3. आध्यात्मिक दृष्टि से सांसारिक आवागमन या भव-बंधन से मुक्त होने की अवस्था या मोक्ष प्राप्त होना 4. मृत्यु के पश्चात् समस्त सांसारिक एवं शारीरिक कपड़ों से छुटकारा 5. दायित्व या देन आदि से मुक्त होने की अवस्था।

मुक्तिका स्त्री. (तत्.) मोती।

मुक्तिक्षेत्र पुं. (तत्.) 1. काशी या वाराणसी नामक तीर्थ स्थान 2. कावेरी नदी के तट पर स्थित वकुलारण्य नामक तीर्थ।

मुक्ति-तीर्थ पुं. (तत्.) 1. मुक्ति प्रदान करने वाला तीर्थ 2. काशी 3. विष्णु।

मुक्ति धन पुं. (तत्.) किसी अपहृत या बंदी व्यक्ति को मुक्त कराने के लिए दिया जाने वाल धन, फिरौती।

मुक्तिधाम पुं. (तत्.) 1. तीर्थ स्नान 2. स्वर्ग 3. परलोक।

मुक्ति-प्रद वि. (तत्.) 1. मुक्ति प्रदान करने वाला पुं. हरा मूँगा।

मुक्ति-फौज स्त्री. (तत्.) दे. मुक्ति सेना।

मुक्ति मंडप पुं. (तत्.) काशी क्षेत्र में स्थित विश्वनाथ का मंदिर।

मुक्ति-मुक्त पुं. (तत्.) शिलारस।

मुक्ति सेना स्त्री. (तत्.) 1. ईसाई मत के प्रचारक ईसाईयों की एक संस्था 2. किसी पराधीन देश के नागरिकों की वह सेना जो स्वतंत्रता आंदोलन में भूमिका निभा रहे हो।

मुक्ति-स्नान पुं. (तत्.) ग्रहण आदि के मोक्ष-काल आने के बाद किया जाने वाला स्नान।

मुक्तोज्ज्वल वि. (तत्.) मोती जैसा श्वेत या उज्ज्वल।

मुखंडा पुं. (तद्.) 1. कुछ विशेष प्रकार के बरतनों में किया जाने वाला वह छेद जिसमें टोंटी लगाई जाती है 2. टोंटी के लिए किया जाने वाला छेद।

मुख पुं. (तत्.) 1. जीव या प्राणी का मुँह 2. चेहरा 3. द्वार, दरवाजा 4. किसी पदार्थ का अगला या ऊपरी खुला भाग 5. आदि, आरंभ, शुरू 6. सामने या पहले आने वाला अंश काव्य. रूपक की पाँच संधियों में से पहली संधि जिसका आविर्भाव बीज, नाम, अर्थ, कृति और आरंभ आदि अवस्थाओं का योग होने पर माना जाता है।

मुख क्षुर पुं. (तत्.) दाँत।

मुख खुर पुं. (तद्.) दे. मुख क्षुर।

मुख गंधक पुं. (तत्.) मुख में गंध फैलाने वाला अर्थात् प्याज।

मुख चपल वि. (तत्.) 1. जो बहुत अधिक या बढ़ा-चढ़ाकर बोलता है, वाचाल 2. कटुभाषी।

मुख-चपलता स्त्री. (तत्.) मुख चपल या वाचाल होने की अवस्था या भाव।

मुखचपला स्त्री. (तत्.) काव्य. आर्या छंद का एक भेद या प्रकार।

मुखचपेटिका स्त्री. (तत्.) गाल पर लगने वाला थप्पड़ या तमाचा।

मुखच्छद पुं. (तत्.) 1. स्वांग, लोकनृत्य आदि के अवसर पर धारण करने योग्य कलात्मक मुखौटा 2. मुख छिपाने का वस्त्र 3. मुख को छिपाने के